Demand to start train services from Giridih, in Jharkhand to Kolkata and Patna

डा. सरफराज़ अहमद (झारखंड): उपसभापति महोदय, हम लोग सदन में बात करते हैं कि झारखंड राज्य के साथ न्याय नहीं हो रहा है। मैं आज उसका जीता-जागता उदाहरण आपको देना चाहता हूँ।

(**सभापति महोदय** *पीठासीन हुए।*)

महोदय, 1980 के दशक में जब मैं लोक सभा सदस्य था, तो मैंने गिरिडीह के लोगों के लिए तत्कालीन रेल मंत्री, माधवराव सिंधिया जी, जो हमारे बीच नहीं रहे, उनसे कहकर दो बोगीज़ लगवाई थी - एक, गिरिडीह से कोलकाता के लिए और दूसरा, गिरिडीह से पटना के लिए और बाद में एक 3 एसी की बोगी भी लगी थी। मैं लालू यादव जी को धन्यवाद देता हूँ, जो बाद में रेल मंत्री हुए, उन्होंने उस बोगी को पटना-दानापुर-हावड़ा सुपरफास्ट ट्रेन में लगवाने की परमिशन दे दी थी। यह सिलसिला चलता रहा। सर, जब सरकारें बदलती हैं तो लोगों की सुविधाएं बढ़नी चाहिए, न कि घटनी चाहिए, लेकिन बाद की सरकार ने उस व्यवस्था को खत्म कर दिया, रोक दिया। कोलकाता व्यापार के लिए, पढ़ने-लिखने के लिए हमारा एक सेंटर है, जो हमारे नजदीक पड़ता है और पटना उस समय हमारी राजधानी थी। यह कहा गया कि वैकल्पिक व्यवस्था की जाएगी, जो आज तक नहीं की गई। आज भी वहां के लोगों को काफी दुश्वारियों का सामना करना पड़ता है। मैं आपके माध्यम से यह मांग करूंगा।

सर, एक बात और है। पटना से हावड़ा के लिए जो "वंदे भारत" ट्रेन चली है, उसका स्टॉपेज भी मधुपुर में नहीं है, जबकि मधुपुर हमारा जंक्शन है। अगर उसका भी स्टॉपेज मधुपुर में हो जाए, तो शायद कुछ सुविधा लोगों को मिल जाएगी। मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करूंगा और दूसरा बात यह है कि हाल के दिनों में पिछले साल एक इंटरसिटी ट्रेन शुरू हुई है, जो पहले तो गिरडी से रांची के लिए शुरू की गई थी, कुछ दिन चली, उसकी टाइमिंग वगैरह में कुछ गड़बड़ी थी, उसमें सुधार किया गया ...(**समय की घंटी**)... बाद में उसको आसनसोल तक extend कर दिया गया। अब वह आसनसोल से रांची जाती है, अब उसमें दो महत्वपूर्ण जगहों पर स्टॉपेज हो। सर, मैं संक्षिप्त में अपनी बात कह रहा हूं। एक महेशमुंडा जंक्शन है, उसमें 25 पंचायत गांडे और 25 पंचायत बेंगाबाद के होते हैं, अगर वह रुकती है, तो बहुत लोगों को रांची आने-जाने में...

एक माननीय सदस्य: सर, माइक ऑफ हो गया है।

श्री सभापति: टाइम ओवर हो गया है, इसलिए माइक बंद हो गया है। ...(**व्यवधान**)... It is because of the time. Everyone knows about it. ...*(Interruptions)*... The time is over. The following hon. Members associated themselves with the matter raised by the hon. Member, Dr. Sarfraz Ahmad: Ms. Dola Sen (West Bengal), Shri Niranjan Bishi (Odisha), Shri Jawhar Sircar (West Bengal), Dr. Sasmit Patra (Odisha), Dr. John Brittas (Kerala), Dr. V. Sivadasan (Kerala), Shri Sanjay Yadav (Bihar), Dr.

Kanimozhi NVN Somu (Tamil Nadu), Shrimati Mahua Maji (Jharkhand) and Shri M. Mohamed Abdulla (Tamil Nadu).

Now Shri Narayana Koragappa; demand for pension facility and health insurance benefit for handloom weavers. Hon. Members, today is Handloom Day.

Demand for Pension facility and Health Insurance benefit to handloom weavers

श्री नारायण कोरागप्पा (कर्णाटक): सभापति महोदय, आपने मुझे अपना विषय रखने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं थोड़ी हिन्दी में भी बात कर सकता हूं। आज देश के कोने-कोने में 10वां हैंडलूम डे मनाया जा रहा है। मैं आपके माध्यम से एक बुनकर होने के नाते अपने समाज के सभी लोगों का अभिनंदन करता हूं। हमारे देश में गांधी जी ने करीब 100 साल पहले स्वदेशी आंदोलन किया था। उस समय ब्रिटिश लोग यूरोप से सभी प्रकार के फैब्रिक्स लाकर यहां व्यापार करते थे। उस समय गांधी जी से सोचा कि जैसे किसान हमारे देश की एक आंख है, उसी प्रकार बुनकर भी हमारे देश की एक आंख है। गांधी जी ने बुनकरों को सपोर्ट करने के लिए एक आंदोलन करके विदेशी कपड़े को जलाने का काम किया। विदेशी लोग वहां से कपड़ा लाते थे और यहां से सोना, चांदी और डायमंड लेकर चले जाते थे। उसमें हमारा एक कोहिनूर डायमंड लंदन के क्वीन पैलेस में है। उसके कैरट की वैल्यु है, यह बाहर के सभी देशों की सोच है, लेकिन उससे बड़ा डायमंड भारत में है, कुछ लोग उसकी वैल्यु नहीं समझते हैं, वह डायमंड हमारे नरेन्द्र मोदी जी हैं, वह हमारे प्रधान मंत्री जी हैं।

वर्ष 1905 में कोलकाता में इस आंदोलन की शुरुआत हुई। यह आंदोलन बुनकर को सपोर्ट करने कि लिए किया गया था। इस बात को ध्यान में रखकर हमारे प्रधान मंत्री जी ने वर्ष 2015 में चेन्नई में हैंडलूम डे बुनकर सामज को दिया। आज 10वां हैंडलूम डे मनाया जा रहा है। Ministry of Textiles, fourth Report on handloom बताती है कि 1995-96 में 65 lakh handloom workers थे, अभी 35 lakh handloom workers हैं, क्यों 50 परसेंट वर्कर्स कम हो गए? गवर्नमेंट को सोचना चाहिए कि उनको क्या प्रोब्लम्स आई कि वे 35 परसेंट रह गए और 10 साल के बाद वे 10 परसेंट रह जाएंगे। उनको 60 साल की उम्र के बाद पेंशन देकर उसकी हैल्थ का ध्यान रखा जाए।

MR. CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by the hon. Member, Shri Narayana Koragappa: Shri Niranjan Bishi (Odisha), Shri Samik Bhattacharya (West Bengal), Dr. Sasmit Patra (Odisha), Shrimati S. Phangnon Konyak (Nagaland), Shri Sujeet Kumar (Odisha), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Shrimati Renuka Chowdhury (Telangana), Dr. Kanimozhi NVN Somu (Tamil Nadu), Shri R. Girirajan (Tamil Nadu), Shri P. Wilson (Tamil Nadu), Shrimati Mahua Maji (Jharkhand) and Shri M. Mohamed Abdulla (Tamil Nadu)

Shri Kesridevsinh Jhala on 'Need for regulation of private detective agencies in India'.